Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Impact Factor (IIJIF): 5.454 | Vol. 8, Issue 1 | May. 2020 - October 2020 | pp. 110-114

नेपाल में लोकतंत्र के समक्ष चुनौतियाँ : वर्तमान परिप्रेक्ष्य (कोरोना काल)

Research Reinforcement
ISSN 2348-3857

डॉ. मंजू

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग
नोबेल्स स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामगढ, अलवर (राजस्थान)

शोध सारांश

नेपाली लोकतंत्र के समक्ष न केवल राजनीतिक अस्थिरता है, बल्कि बिगडती आर्थिक स्थिति को चुनौती रही है। नेपाल के पास प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता होने के बावजूद उनका दोहन नहीं कर पाता है। क्योंकि उसके पास आधुनिक तकनीकी साधनों का अभाव है, नेपाल का आर्थिक ढांचा विदेशी सहायता (भारत, अमेरिका, चीन व अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं) पर निर्भर है। वर्तमान में आयी वैश्विक महामारी कोरोना वायरस के कारण नेपाली अर्थव्यवस्था का 70 फीसदी कारोबार कम हो गया। कोरोना वायरस के कारण नेपाल की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार रहा पर्यटन उद्योग पूरी तरह प्रभावित रहा है, जिससे पर्यटन उद्योगों पर टिकी नेपाली अर्थव्यवस्था डगमगाने लगी है। दुनिया के तमाम देशों में आर्थिक मंदी के संभावित खतरे के बीच करोना संकट का असर नेपाल की अर्थव्यवस्था पर भी पड़ने जा रहा है। एशियन डेवलपमेंट बैंक (ADB) ने नेपाल की अर्थव्यवस्था के लिए खतरनाक संकेत दिए है। और कहा है कि मौजूदा स्थिति को देखते हुए यह आशंका है कि नेपाल की जीडीपी में और गिरावट आएगी और यह 5.3 फीसदी रह जायेगी पिछले वित्त वर्ष यानी 2018-19 में नेपाल की जीडीपी 7.3 फीसदी थी। एडीबी ने पहले कहा था कि इस साल नेपाल की जीडीपी 6.3 फीसदी रह सकती है लेकिन अब अपनी ताजा रिपोर्ट में उसने कोरोना संकट की वजह से और नीचे गिरने के संकेत दिए है।कोविड-19 फैलने के बाद से ये किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थान की तरफ से जारी की गई पहली रिपोर्ट है।इसमें कहा गया है कि खासकर 24 मार्च के बाद से हुआ लॉक डाउन नेपाल की अर्थव्यवस्था के लिए बेहद नुकसानदेह साबित होगा। जबकि नेपाल सरकार ने इस बार अपनी जीडीपी का लक्ष्य 8.5 फीसदी का तय किया था। रिपोर्ट में इस गिरावट के पीछे उद्योग और सेवा क्षेत्र में कामकाज का बंद होना बताया है पहले ही यहाँ मानसून के देरी से आने , फसले खराब होने और खासकर चावल की फसलों पर इसका सबसे बुरा असर होने की वजह से अर्थव्यवस्था पर बुरा असर पड़ने की आंशका जताई जा रही है। अब कोरोना और लॉकडाउन ने हालत ओर चिन्ताजनक बना दिए हैं।

संकेताक्षर : *विदेशी सहायता, भौगोलिक बाध्यता, आर्थिक कूटनीति*

प्रस्तावना

नेपाल के राजनीतिक व्यवस्था तथा राजनीतिक संस्कृति पर वहां के भूगोल का ही नहीं, बल्कि आर्थिक स्थिति का भी स्पष्ट प्रभाव पड़ा है। नेपाल की अर्थव्यवस्था को सामन्तवादी ही नहीं, बल्कि ''पूर्व सामन्ती'' व्यवस्था भी कहा जा सकता है। नेपाल में लोगों की आमदनी का सबसे बड़ा साधन पर्यटन उद्योग है, लेकिन इस साल (2020) में आयी करोना वायरस वैश्विक महामारी के चलते यहाँ पर्यटकों की संख्या काफी कम हो गई है। आज नेपाल में इस महामारी के चलते संघर्षरत है।

नेपाल की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि ही रहा है, लेकिन नेपाल का 80 प्रतिशत भाग या तो बर्फीले पहाड़ों से ढका हुआ है या ऐसी पहाड़ी व घाटियों से जिसमें कोई महत्वपूर्ण कृषि उद्योग लगाये नहीं जा सकते है। इस क्षेत्र में नेपाल की अधिकतर जनसंख्या सीमांत कृषि पर निर्भर है, जिसमें कोई अतिरिक्त आय या पूंजी निर्माण नहीं हो पाता है। नेपाल का केवल 20 प्रतिशत क्षेत्र ऐसा है जो की मुख्य रूप से काठमांडू घाटी तथा तराई में है। जहां सघन कृषि की जा सकती है एवं बड़े व मध्यमश्रेणी के उद्योग लगाये जा सकते है।

नेपाल में कृषि के लिए जो भूमि थी उस पर कुछ विशिष्ट लोगों का ही अधिकार था। जिन्होंने इसे अन्यायपूर्ण तरीके से हासिल कर गरीब जनता को स्वयं पर आश्रित बना रखा था। 1980 से पूर्व अथवा राणाकाल के दौरान नेपाल में भूमि की व्यवस्था असामान्य और अन्यायपूर्ण थी अर्थात् वहां पर पाँच प्रकार की व्यवस्थायें प्रचलित थी। यथा-

(1) रेकर, (ख)वीरता, (ग) गुथी, (घ) किपर व (ड) रिकार

(क) रेकर : इसके अंतर्गत भूमि कर सीधे राज्य को दिया जाता था,

(ख) वीरता : इसे करमुक्त रखा गया था और इसमें राज्य के द्वारा भूमि व्यक्तियों को प्रदान की जाती थी या उन्हें ईनाम के रूप में दी जाती थी,

(ग) गुथी- इसमें धार्मिक और लोकहित के कार्यों के लिए राज्य के द्वारा भूमि दान में दी जाती थी या उन्हें ईनाम के रूप में दी जाती थी,

(घ) किपर - यह जाति विशेष पर आधारित भूमि व्यवस्था थी,

(ङ) रिकार - यह विशिष्ट सेवाएं प्रदान करने वाले व्यक्तियों को दी जाती हैं।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि 1950 से पूर्व की कृषि आधरित भूमि व्यवस्था में जमींदारों, बीरता,आसामियों और महंतों की ही प्रमुख भूमिका थी। इसके विपरीत जनसंख्या का 40 प्रतिशत भाग भूमिहीन था पर उसे किसी प्रकार के राजनीतिक व आर्थिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। अर्थात् इस भूमि व्यवस्था में वे महज जड़विहीन कृषक बनकर रह गये थे और जो कृषि क्षेत्र था वह भी परम्परागत संसाधनों पर आधारित एवं अव्यस्थित था और अनिश्चित वर्षा उत्पादन वृद्धि दर नगण्य था।

इसके अतिरिक्त भौगोलिक बाध्यताओं के कारण भी नेपाल का आर्थिक विकास नहीं हो पाया खनिज पदार्थों की अल्पता इसके पिछड़ेपन का महत्वपूर्ण कारक है और ये नेपाल की औद्योगिक आवश्यकताओं की पूर्ति में पर्याप्त नहीं है। अत: इसका प्रयोग औद्योगिक और व्यापारिक स्तर पर अधिक नहीं हो पाया।

समुद्री सीमा का अभाव विश्व की एक बहुत बड़ी सीमा हैं। विश्व के राष्ट्रों में 1/5 राष्ट्र इस भौतिक दुर्भाग्य से ग्रस्त है। नेपाल भी उसमें से एक हैं। यही भौगोलिक दुर्भाग्य नेपाल के आर्थिक विकास के अवसर सीमित करता है। भौगोलिक परिस्थिति के कारण ही नेपाल की सम्पूर्ण यातायात व्यवस्था 20-30 मिल रेल मार्ग और 40-50 मील सड़क मार्ग तक ही सीमित थी।

अत: नेपाल की भौगोलिक बाध्यता उसकी अर्थव्यवस्था के पिछड़ेपन, कृषि उत्पाद एवं औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण बाधा थीं। राणा काल में आर्थिक स्थिति सोचनीय थी। नेपाल की अर्थव्यवस्था स्थिर एवं परम्परागत प्रकृति की राणाओं द्वारा प्रशासन पर कुछ होने के पश्चात् राज्य की वार्षिक आय में से जो भी शेष रहता था। वह राणा प्रधानमंत्रियों के खजाने में चला जाता था। इसके द्वारा उपजाऊ भूमि व वनों को भी स्वयं के लिए आरक्षित कर रखा था और व्यापार पर भी इनका आधिपत्य था अर्थात् देश की 95 प्रतिशत सम्पदा के कर्ता-धर्ता राणा परिवार के सदस्य ही थे। ये अपना राजनीतिक वर्चस्व बनाये रखने के लिए नेपाल की अर्थव्यवस्था को परम्परागत एवं अविकसित बनाये रखा और आधुनिकीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम नहीं उठाया।

उपरोल्लेखित कारणों से नेपाल में संचार परिवहन, विद्युत आदि सुविधायें नगण्य थी और आधारभूत औद्योगिक ढांचाा नहीं था। तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा का श्री गणेश ही नहीं किया गया था। शिक्षा, स्वास्थ्य आदि मूलभूत सुविधाएं अनुपलब्ध थी। व्यापार एवं वाणिज्य में सलंग्न थे। चूंकि नेपाल कभी भी उपनिवेशवादी शासन व्यवस्था के अधीन नहीं रहा। अत: वह बाह्य सामाजिक आर्थिक प्रभावों के संपर्क में नहीं आया। इसलिए वह आधुनिकीकरण एवं विकास की प्रक्रिया से वंचित रहा। यद्यपि वर्ष 1930 व 1940 के दशक में नेपाल में कतिपय उद्योग-धंधों, आधुनिक कृषि वाणिज्य के विकास हेतु प्रयास किये गये थे लेकिन एक समन्वित आर्थिक विकास कार्यक्रम का आभाव रहा। सारत: नेपाल में अर्थव्यवस्था इतनी पिछड़ी हुई थी की वर्ष 1963 तक वहां एक आधुनिक बैंक तक नहीं था।

अत: नेपाल 1950 तक भी आधुनिकता और विकास की प्रक्रिया से अछूता था या राणा शासकों द्वारा रखा गया था एवं समाज अभी सदियों पूर्व पूराणपंथी युग में जी रहा था। अत: नेपाल में अभी राजनीतिक चेतना का अभाव दृष्टिगोचर हो रहा था। नेपाल विश्व के गरीब एवं पिछड़े हुए देशों में से एक हैं, इसलिए यह स्वाभिक है कि नेपाल संयुक्त राष्ट्र संघ की आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय रुचि लेता हैं।

नेपाल भू-अविष्टित है इसलिए अंकटाड में इस प्रकार के राष्ट्रों की समस्याएँ उठाने में वह सदैव सक्रिय रहा। अंकटाड में नेपाली वाणिज्य मंत्री वी.एन.झा ने जोर देकर कहा कि विकासशील भू-आवेष्टित राज्यों को प्रतिबंदित मार्ग या पंथ उनके अधिकार के रूप में प्रदान करने चाहिए। नेपाल आर्थिक विकास के क्षेत्र में पिछड़ा हुआ है। यह न केवल विश्व के सबसे पिछड़े देशों में से एक

हैं बल्कि पूर्णत: भू-आवेशित भी हैं। महासभा की द्वितीय समिति में 6 दिसम्बर, 1956 में नेपाल में तकनीकी सहायता कार्यक्रम सम्बन्धी प्रस्ताव का समर्थन किया।

भारत के प्रधानमंत्री ने 19 नवम्बर 2018 को पश्चिमी नेपाल में 3 स्कूलों के निर्माण के लिए आर्थिक सहायता दी थी। इससे पहले सड़क निर्माण हेतु 470 मिलियन रूपये की सहायता प्रदान की थी। नेपाल ने आर्थिक विकास के लिए क्षेत्रीय सहयोग के महत्व को भी समझा एवं उसमें सक्रिय रूचि ली है। नेपाली प्रतिनिधि ने आशा व्यक्त की कि क्षेत्रीय विकेंद्रीकरण का विचार इकेफ की भूमिका को मजबूत करने में सहायक होगा।

नव स्थापित नेपाली लोकतंत्र को समय-समय पर नेपाल अधिराज्य की नौकरशाही तथा राजसिंघासन की तरफ से भी चुनौतियां मिलती रही। नेपाली नोरशाही में नेपाल के अभिजात वर्ग का प्रभुत्व है तथा यह नेपाल के परंपरागत शासकों के प्रति अधिक संवेदनशील रही। नेपाल में यह परम्परा रही है कि त्रि-वर्गो यथा, 'ए' 'बी' व 'सी' में राणावंश का विभाजन किया गया जिसमें 'ए' वर्गीय राणा प्रधानमन्त्री के रूप में शासन का संचालन करते हैं 'बी' तथा 'सी' वर्गीय राणा राज्य के प्रतिष्ठित पदों पर नियुक्ति ही प्रशासन का संचालन करते हैं। अत: यह सुनिश्चित है कि ये जन आन्दोलन में जनता की मांगों के प्रति सदैव विमुख रहे हैं और यह भी स्पष्ट है कि लोकतंत्र व्यक्तिगत समानता के सिद्धान्त को पोषण करता है कि इस अभिजात वर्ग के विशेषाधिकारों पर कुठाराघात करता है। इसी प्रकार नौकरशाही के विभिन्न पदों कर नियुक्त अधिकारी विलासितापूर्ण परिवेश का प्रतिनिधित्व करते रहे है। जिसमें सामान्य जनता की समस्याओं के प्रति जवाबदेहिता का पूर्णत: अभाव रहा है और यह इस प्रकार की व्यवस्था को कैसे स्वीकार कर सकते हैं? जिसमें आम जनता व उसी जरुरतों का केवल ध्यान दिया जाना था वरन् व्यक्तिगत गरिमा का ध्यान रखते हुए उनको इस उच्च अभिजात वर्ग के बराबर का दर्जा दिये जाने की व्यवस्था की जाये।

नेपाल में आर्थिक सहायता का सबसे महत्वपूर्ण कारक विदेश नीति है। विदेश नीति एक देश से दूसरे देश के साथ संबंधों कों चलाने का उपकरण है। यह पूर्णत: राजनीतिक निर्णय करने वाले का दृष्टिकोण नहीं है परन्तु यह एक सामाजिक जटिल प्रक्रिया है। विदेश नीति कई कारकों के आधार पर तय की जाती है। इन कारक की परस्पर महता एक देश से दूसरे देश में बदल सकती है। यह आन्तरिक और बाहरी दबाव की स्थितियों के अनुसार बदल सकती है।

विदेश नीति का एक देश की राष्ट्रीय हितों को बढ़ाने और सुरक्षा व्यवस्था को बढाना मुख्य लक्ष्य होता हैं। इन रुचियों को महसूस करने के लिए विभिन्न प्रकार के उपकरण उपयोग में लिए जाते हैं। उनमें से एक हैं विदेशी सहायता। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विदेशी सहायता को बड़े पैमाने पर प्रयोग में लिया गया। वास्तव में युद्काल के बाद में विकसित और विकासशील दोनों देशों में विदेशी सहायता कार्यक्रम विदेशी सहायता प्राप्त देशों में उनकी राष्ट्रीय रुचियों को बढाने और सुरक्षित रखने के लिए चलाये जाने लगे। इस प्रकार विदेशी सहायता का उद्देश्यों और विदेशी नीति के कारकों के विस्तृत वर्णन किया गया। विदेशी नीति के कारकों के विस्तृत रूपों को दो भागों में बांटा गया हैं। यह आंतरिक कारक और बाह्य कारक है।

विदेशी सहायता विदेशनीति के महत्वपूर्ण आन्तरिक कारक है जिसमें भौगोलिक, सामाजिक,आर्थिक,पारस्परिक राजनीतिक कारक, सामाजिक संस्कृति रहन-सहन और विदेश नीति निर्माताओं का व्यकितत्व आदि शामिल किये गये है। विदेश नीति के कारकों में भूगोल एक महत्वपूर्ण कारक है, क्योंकि यह स्थिर प्रकृति का हैं। यह अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में सही तरीके से मील का पत्थर कहा जाता है। वर्तमान समय में यह माना जाता है कि सभ्य तकनीकी के विकास में भूगोल की भूमिका को कम किया हैं। परन्तु अभी भी इसके महत्व को नकारा नहीं जा सकता। भारत की नेपाल के प्रति नीति के सम्बन्ध में भूगोल एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

आधुनिक समय में आर्थिक कारक अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में महत्वपूर्ण स्थान रखते है। वास्तव में राष्ट्रों के मध्य बढ़ती पारस्परिक निर्भरता, आर्थिक रुचियों के कारण,यह विदेश नीति का एक बढ़ता हुआ महत्वपूर्ण कारण बनता है।

भारत में नेपाल की आर्थिक रुचियां जबकि राजनीति रणनीति मान्यताएँ भारत की नेपाल की तरफ नीति का प्रमुख व महत्वपूर्ण योगदान हैं। तब तक आर्थिक रूचियां भी मानने योग्य विचारधाराएँ है भारत नेपाल में कई आर्थिक रूचियां रखता है जैसे कि जल स्त्रोतों का उपयोग, व्यापार को बढावा, निजी पूंजी को बढ़ावा आदि है।

नेपाल में भारत की आर्थिक रूची को बढ़ाने में जल स्त्रोत का महत्वपूर्ण स्थान है। भारत की पूर्वी नदी तंत्र का एक बहुत बड़ा भाग एक नेपाल में उद्गम होता है। ये नदियां ऊर्जा पैदावार,सिंचाई, नौकायात्रा के उद्देश्य से भी उपयोग की जाती है। नेहरू ने अपनी उपलब्धियों के साथ 1 जून, 1948 में यह देखा की हम तीन बड़ी नदी घाटी योजना रखते है जिसमें सिंचित जमीन, बाड़ रोकने के साधन, मृदा अपरदन और मलेरिया आदि को सम्मिलित करता है। हाईड्रो इलेक्ट्रिक पाउडर का एक बड़ा सौदा करेंगे और इसी समय

पर हम औद्योगिक विकास भी करेंगे। यदि तुम भारतीय मानचित्र की तरफ देखते हो तुम उत्तर से उत्तर-पूर्व की और हिमालय की प्रभावशाली श्रेणी देखोगे। मैं यह नहीं सोचता की यहाँ संसार के किसी भी भाग में इस क्षेत्र के समान शक्तिशाली अप्रत्याशिक ऊर्जा शक्ति क्षमता है परन्तु यह उपयोग की जा सकती है। दो देशों के द्वारा एक गहन समस्या जो कि देखी जाती है वह है नदी की बाड़ के कारण। ये नदियां नेपाल के तराई क्षेत्र में एक बड़ा क्षेत्र क्षतिग्रस्त कर देती है और भारत के बिहार, उत्तरप्रदेश, और उससे सटे राज्यों का एक बड़ा क्षेत्र है उसे नष्ट करती है। बाढ़ की समस्या इन नदियों पर बांध का निर्माण करके हटाई जा सकती है। भारत का इन नदियों का प्रयोग करने का प्रयास पूर्ण रूप से नेपाल के जाग्रत सहयोग पर निर्भर करता है।

भारत के लिए नेपाल के साथ व्यापार का बढ़ावा दक्षिणी एशिया में आर्थिक रूचि को बढाने में महत्वपूर्ण है। वास्तव में संसार के तीसरी दुनिया के देश विशेष रूप से पडौसी देश भारत व्यापार को बढाने के लिए एक बड़ा क्षेत्र प्रदान करते है। भारत के साथ नेपाल का लगभग 9 प्रतिशत व्यापार है। यह भारत पर निश्चित आवश्यक उपयोगी वस्तुओं के लिए निर्भर रहता है। चूँकि नेपाल एक भू-आविष्ठित प्रदेश है तो भारत इसके लिए समुद्र पार व्यापार का निकास द्वार है यह नेपाल के साथ भारत के नजदीकी व्यापार संबंधों को बढ़ाने और रख-रखाव की रूचि पर निर्भर है। यह राज्यों में आर्थिक गतिविधियां बढ़ाने और अर्थव्यवस्था के आधुनिकीकरण करने के साथ-साथ लोगों की उपभोग क्षमता को बढ़ाने की मांग करता है। चूंकि नेपाल पूंजी और तकनीकी दोनों में कम है। इसलिए इसकी अर्थव्यवस्था को त्वरित गति से नहीं बड़ा सकता जब तक इनकी विदेशी सहायता के रूप में आगत प्रदान नहीं किया जायेगा।

विदेश नीति के रूप में विदेशी सहायता का प्रचलन विशेष रूप द्वितीय विश्व युद्ध के बाद हुआ यूरोम के आर्थिक पुनर्निर्माण के लिये घोषित मासिक योजना से इसकी शुरुआत मानी जा सकती है। वस्तुत: द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद यूरोप में कई देश आर्थिक पुनर्निर्माण की समस्याओं से जूझ रहे थे। उन के पास अनेक साधन नहीं थे अत: उनको विदेशी सहायता पर निर्भर रहना पड़ा । इस समय तक शीत युद्ध की शुरुआत हो चुकी थी। विश्व दो खेमों में बढ़ता जा रहा था। एक ओर अमेरिका के नेतृत्व में पश्चिमी गुट तो दूसरी ओर सोवियत संघ के नेतृत्व में साम्यवादी गुट दोनों ही अपने समर्थकों की संख्या बढ़ाने व अपने प्रभाव व विस्तार करने की होड़ में थे। उनकी आर्थिक संकट से जूझ रह यूरोपियों देशों के प्रभाव में लेने का यह एक अच्छा मौका दिखाई दिया कि इन देशों को आर्थिक सहायता दी जाये तथा इसके माध्यम से इनको अपने प्रभाव क्षेत्र में लिया जाये। परिणामस्वरूप व्यापक मात्रा में आर्थिक सहायता का प्रचलन हुआ था इस रूप में गिना जाने लगा।

आर्थिक पुनर्निर्माण की समस्या विकासशील देशों के सामने अधिक थी क्योंकि उपनिवेशवादी शक्तियों ने इनका जम कर शोषण किया था। अब जबकि ये उपनिवेशवाद से स्वतन्त्र हो रहे थे तो न तो इनके पास आर्थिक साधन थे और न ही किसी प्रकार का आर्थिक विकास अब तक इन देशों का हुआ था अमेरिका व सोवियत संघ दोनों ने ही समाज के इन नये स्वतन्त्र देशों को आर्थिक सहायता देकर इनको अपने प्रभाव में लिया जा सकता है अमेरिका का यह दृष्टिकोण था कि जितना उसके प्रभाव क्षेत्र का विकास होगा उतना ही उनकी शक्ति में वृद्धि होगी। दूसरा यह भी था कि आधुनिकीकरण एवं विकास की समस्याओं से जूझ रहे इन देशों में साम्यवादी आन्दोलन सफल हो सकता था। अत: साम्यवाद के प्रसार को रोकने के लिए भी आर्थिक सहायता को अनिवार्य माना गया। इनका परिणाम यह निकला की बड़ी मात्रा में एशिया व अफ्रीका के देशों को भी सहायता दी जाने लगी। वस्तुत: एशिया व अफ्रीका के देशों की समस्या यह थी की जहां उनके पास एक कमजोर सामाजिक ढांचा या संसाधनों का आभाव था तो दूसरी और लोकतान्त्रिक व्यवस्था के आने के साथ ही आकांशा व अपेषाय इन देशों में आन्दोलन का रूप धारण करती जा रही थी। अत: इनकी पूर्ति आवश्यक थी। अत: इन देशों की सरकारों के लिए आर्थिक सहायता प्राप्त करने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं था।

प्रारम्भ में आर्थिक सहायता की कूटनीति केवल विकसित राज्यों तक ही सीमित थी । लेकिन धीरे-धीरे विकासशील देश भी आर्थिक सहायता देने लग यहाँ तक की ये विकासशील देश थे जो की स्वतंत्र आर्थिक सहायता प्राप्त कर रहे थे। उन्होंने विदेश सहायता देना प्रारम्भ कर दिया । इससे यह साबित होता है कि विदेश नीति के मंच के रूप में विदेश सहायता का महत्व बढ़ता जा रहा था। यद्यपि यहाँ पर यह स्पष्ट करना उचित होगा की जहाँ महाशक्तियों के द्वारा दी जा रही आर्थिक सहायता सीमित एवं क्षेत्रीय हितों की पूर्ति के लिए थी।

निष्कर्ष

नेपाल एक कृषि प्रधान देश है जिसकी तिरानवे प्रतिशत जनता कृषि पर आधारित है। शेष सात प्रतिशत जनता कृषि आधारित उद्योगों अथवा अन्य व्यवसायों पर निर्भर है। कृषि क्षेत्र के द्वारा

राष्ट्रीय आय का बासठ, प्रतिशत तथा निर्यात का अस्सी प्रतिशत अंश प्राप्त होता है। राष्ट्र का अधिकांश भाग हिमाच्छादित तथा वनाच्छादित होने के कारण सन उन्नीस सौ पचास ईसवी तक केवल पंद्रह लाख चालीस हजार एकड़ भूमि पर विस्तृत खेती की जाती है।

इसका असर नेपाल की जीडीपी पर भी पड़ रहा है एश्यिन डवलपमेंट बैंक (ADB) की रिपोर्ट के मुताबिक यही स्थिति रही तो देश की जीडीपी 7.10 फीसदी से गिर कर 6.3 फीसदी आ सकती है नेपाल में बेरोजगारी बढ़ने से नौकरी के नाम पर मानव तस्करी तेज हो गयी है सीमा सील होने के बाद तस्कर महिलाओं, युवतियों व बच्चों को पगडण्डी के रस्ते भारत भेज रहे है। दिल्ली से काठमांडू तक इनका नेटवर्क फैला है। माह भर के अन्दर जिले में 10 से अधिक मामले सामने आने पर सुरक्षा एजेंसिया सतर्क हो गयी है। महाराजगंज के ऊपर पुलिस अधीक्षक निवेश कटियार ने कहा कि मानव तस्करी को देखते हुए सीमा सतर्कता बरती जा रही है। सभी सुरक्षा एजेंसियों से समन्वय बना कर मानव तस्करी पर अंकुश लगाया जायेगा।

कोरोना के इस दौर में नेपाल में पर्यटक के आने की समस्या थम गयी है। इस वर्ष 8 माह में महज 177675 विदेशी पर्यटकों ने नेपाल की आबादी का यह आंकड़ा पिछले वर्षों के मुकाबले काफी कम है। नेपाल पर्यटन बोर्ड के मुताबिक वर्ष 2019 में 11.7 लाख विदेशी पर्यटक नेपाल आये तथा 2018 में 15.2 लाख पर्यटक घूमने आये इनमें से सर्वाधिक 2.9 लाख भारतीय थे तथा 1.69 लाख चीनी पर्यटकों दूसरे स्थान पर रहे।

पर्यटन व्यवसाय पर आधारित नेपाल का आर्थिक ढांचा कोरोना के चलते चरमरा गया है बीते मार्च माह से ही वह होटल सूने पड़े। पेइंग गेस्ट रखकर जीविका चलने वाले नेपाल के बहुसंख्यक लोगों का आय का स्त्रोत भी बंद है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सूद एवं सहुगुणा, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, राधा पब्सिकेशन, दिल्ली, 1997, पृ.सं. 103
2. प्रेमदेव, जयप्रकाश एवं मिश्र, कृष्ण कुमार, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, शलम प्रकाशन, मेरठ, 1994, पृ.सं. 25
3. शाह, शिशिकेश, नेपाल राजनीतिक व्यवस्था एवं पर राष्ट्रनीति, कोणार्क पब्लिकेशन, बनारस, 1980, पृ.सं. 220
4. शंकर, भूपेन्द्र सिंह, एस.पी. एवं अष्ठाना, चित्रा, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1996, पृ.सं. 86
5. शर्मा, प्रभुदत्त, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर, 1999, पृ.सं. 67
6. प्रधान, बिसावा, पंचायत डिमोक्रेसी इन नेपाल, राकेश प्रेस, नई दिल्ली, 1963, पृ.सं. 173
7. एकर, टी. हार्व. सीक्रेटस ऑफ द मिलियनेअर माइंड, सांकेत प्रकाशन, 2019, पृ.सं. 139
8. डूफलो, एस्थर एण्ड बनर्जी, अभिजीत, गुड इकोनोमिक्स फॉर हार्ड टाईमस, पब्लिक अफेयर पब्लिकेशन, न्यूयॉर्क, 2019, पृ.सं. 110
9. धर्मदासनि, एम.डी., नेपाल इन ट्रांजेक्शन, राजधानी पब्लिकेशन, जयपुर, 1997, पृ.सं. 62
10. कुमार, डी.पी., नेपाल : ए इयर ऑफ डिसीजन, विकास पब्लिसीन हाउस, देहली, 1980, पृ.सं. 28
11. कुमार, आशुतोष, चाइना फैक्टर इन नेपाल, सुमित इंटरप्राइजेज पब्लिशिंग, नई दिल्ली, 2013, पृ.सं. 132
12. चिरंजी, भोला, ए स्टेडी ऑफ रीसेन्ट नेपालिज पॉलिटिक्स, द वर्ड क्रेज पब्लिशिंग, कलकत्ता, 1967, पृ.सं. 255
13. राहुल, राम, मॉर्डन नेपाल, मुन्सिराम मनोहरलाल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1985, पृ.सं. 3
14. नेगी, एस.एस, फोरेस्ट एण्ड फोरेस्ट्री इन नेपाल, आशीष पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1994, पृ.सं. 71
15. शर्मा, प्रभुदत्त : अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, पूर्वोक्त, पृ.सं. 309
16. शंकर, भूपेन्द्र सिंह, एस.पी.एवं अष्ठाना, चित्रा, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, पूर्वोक्त, पृ.सं. 79
17. रेगमी, सी. महेश, इन इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ नेपाल 1846-1901, राजधानी न्यूज पब्लिकेशन, 1948, पृ.सं. 43
18. डूफलो एस्थर एवं बनर्जी अभिजीत, पुअर इकोनोमिक्स, पब्लिक अफेयर पब्लिकेशन,न्यूयॉर्क, 2019, पृ.सं. 148
19. राजस्थान पत्रिका, 25 सितम्बर, 2020, पृ.सं. 12
20. हिन्दी करेंट अफेयर क्विज, 11 जुलाई, 2020, पृ.सं. 6
21. डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू जागरण डॉट कॉम <एचटीटीपीः//डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट जागरण डॉट कॉम>, 17 सितम्बर, 2020
22. चारण, वाई.बी., इण्डियन फॉरन पॉलिसी
23. दी हिन्दू समाचार-पत्र, 5 अगस्त 2020